हिन्दुत्व विचारधाराः उत्पत्ति, उत्कर्ष एवं धर्मनिरपेक्षता पर प्रभाव

डॉ0 शिवानी
(राजनीति विज्ञान)
डी.ए.वी. सेन्टनेरी कॉलेज, फरीदाबाद
ईमेलः shivanitanwar1973gmail.com

सारांश

हिन्दुत्व विचारधारा भारतीय राजनीति, समाज और संस्कृति के गतिशील और विवादस्पद पहलुओं मे से एक प्रमुख विषय है। इसकी उत्पति भारतीय उप–महादीप में औपनिवेशक युग की जटिलताओं में हुई,जहां धार्मिक,सांस्कृतिक और राजनैतिक अस्मिताएँ तीव्र संघर्षो का केन्द्र बनी। हिन्दुत्व का अर्थ केवल हिन्दू धर्म तक सीमित नही है, बल्कि यह एक व्यापक सांस्कृतिक, जातीय और राष्ट्रीय पहचान की अवधारण है, जो भारतीय राष्ट्र की समग्र एकता और अखंडता को हिन्दू सांस्कृतिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास करता है। विनायक दामोदर सावरकर द्वारा 1923 में प्रतिपादित इस विचारधारा ने समय के साथ विभिन्न वैचारिक,सगंठनात्मक एंव राजनैतिक रूपों में विकसित होकर देश के सामाजिक ताने–बाने को प्रभावित किया हैं। यह शोधपत्र हिन्दुत्व के उदम, उसके वैचचरिक विकास प्रमुख संस्थाओं के माध्यम से इसके प्रसार, और समकालीन राजनीतिक एंव सामाजिक प्रभावों का तटस्थ एंव विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। साथ ही, यह भारत के धर्मनिरपेक्ष तंत्र से हिन्दूत्व के टकराव के पहलुओं, बहसों और संभावित परिणामों का भी विवेचन करता है। हिन्दुत्व के समर्थकों दारा इसे भारतीय संस्कृतिक गौरव और राष्टीय एकता का माध्यम माना जाता है,जबकि आलोचक इसे बहुलतावाद और संवैधानिक धर्मनिरपेक्षता के लिए खतरा बताते है।

इस अध्ययन का मुख्य उदेश्य हिन्दुत्व विचारधारा को उसकी ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के संदर्भ

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 22/08/25
Approved: 20/09/25

डॉ0 शिवानी

हिन्दुत्व विचारधाराः उत्पत्ति, उत्कर्ष एवं धर्मनिरपेक्षता पर प्रभाव

RJPP Apr.25-Sept.25,
Vol. XXIII, No. II,
Article No. 32
Pg. 240-248
Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-sept-2025-vol-xxiii-no2-261

https://doi.org/10.31995/rjpp.2025.v23i02.032

में समझना तथा उसकी धर्मनिरपेक्षता पर पड़ने वाले प्रभावी चुनौतियों पर विवेचना करना है। भारत की विविध संस्कृतिक और धार्मिक पहचान को बनाए रखते हुए इस विचारधारा के बढ़ते प्रभाव का संतुलन कैसे स्थापित किया जा सकता है, यह शोध पत्र इसका दृष्टिकोण प्रदान करता है।

मुख्य शब्द

हिन्दुत्व, विनायक दामोदर सावरकर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, राष्ट्रीय राष्ट्रवाद, भारतीय जनता पार्टी, राम जन्मभूमि आन्दोलन, धर्मनिरपेक्षता, समान नागरिक संहिता, अल्पयंख्यक अधिकार

परिचय

भारत सदियों से एक विविध, बहुसांस्कृतिक और बहुधार्मिक समाज रहा है। इसकी सामाजिक–राजनैतिक संरचना में विविध जातियां, भाषाएँ, संस्कृतिकयाँ, और सह–अस्तित्व के साथ शामिल है। इस व्यापक विविधता के बावजूद, भारतीय संविधान ने अपने प्रारंभ से ही धर्मनिरपेक्षता को राष्ट्र का मूलभूत सिद्धांत घोषित किया, जिसके तहत राज्य सभी धर्मो के प्रति समान दृष्टिकोण रखता है और किसी एक धर्म को विशेष स्थान देता।भारत की राजनीतिक चेतना और सामाजिक संरचना में यह धर्मनिरपेक्षता बहुलवाद,सहिष्णुता और समान नागरिक अधिकारों को स्थापित करने का प्रमुख आधार रही है। लेकिन बीसवीं शताब्दी के आरंभ से लेकर अब तक एक विचार धारा ने धीरे–धीरे अपने पैर जमाए, जिसने भारतीय राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान को हिन्दू मूल्यों और पंरपराओं के चारों ओर केंन्द्रित किया। इस विचारधारा को "हिन्दुत्व" कहा जाता है। "हिन्दुत्व का जन्म उस ऐतिहासिक काल में हुआ जब भारत के धार्मिक और सांस्कृतिक समीकरण तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहे थे।–औपनिवेशक सत्ताओं द्वारा धार्मिक समुदायों के बीच राजनीतिक विरोधाभासो को भड़काया जा रहा था और सामाजिक एकता टूट रही थी। उसी वक्त हिन्दू समाज में एक सशक्तराष्ट्रयता के भाव का उदय हुआ, जो अपने अस्तित्व,सांस्कृतिक गौरव और राजनीतिक अधिकारों की रक्षा चाहता था।

विनायक दामोदर सावरकर ने 1923 में "हिन्दूत्व": हिन्दू कौन है? नामक पुस्तक में इस विचार को पहली बार व्यवस्थित रूप से परिभाषित किया। सावरकर ने हिन्दुत्व को केवल धार्मिक पहचान से ऊपरउ ठाकर एक व्यापक सांस्कृतिक जातिय और राष्ट्रीय अवधारणा के रूप मे प्रस्तुत किया। उनके अनुसार जो व्यक्ति अपनी पितृभूमि और पुण्यभूमि दोनों भारत को मानता हैं तथा भारतीय सांस्कृतियों और परम्पराओं से जुड़ा होता है, वही हिन्दू कीलाता है। इस परिभाषा ने भारतीय समाज के विविध घटकों के बीच एक नई पहचान और सीमा रेखा स्थापित कर दी,जहां कुछ धार्मिक समुदायों जैसे मुस्लिम और ईसाई"विदेशी धर्म" की श्रेणी मे आए। इसके बाद, इस विचारधारा को संगठित और राजनीतिक रूपांतर प्रदान करने के लिए के.बी.हेडगेवार ने 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की स्थापना की। इस संगठन ने हिन्दुत्व को न केवल एक सांस्कृतिक चेतना के रूप में फैलाया, बल्कि इसे भारतीय समाज के हर क्षेत्र में फैलाने के लिए व्यवस्थित संथागत नेटवर्क तैयार किया। RSS और इससे जुड़े अन्य संगठनो जैसे विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल, अखिल भारतीय विघार्थी परिषद आदि ने शिक्षा, युवाओं, महिला संगठनो, और सामाजिक आन्दोलनों के माध्यम से हिन्दुत्व की विचारधारा को जनसामान्य तक पहुँचाया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने धर्मनिरपेक्षता के संविधानिक सिद्धांत को स्वीकारा, लेकिन हिन्दुत्व विचारधारा ने राजनीति में अपनी स्थिति बनाए रखी। 1980 के दशक में राम जन्मभूमि आन्दोलन ने हिन्दुत्व को राष्ट्रीय राजनीति के केन्द्र में ला दिया। 2014 और 2019 के आम चुनावों में भारतीय जनता पार्टी (BJP) की विजय ने इस देश की मुख्य राजनीतिक विचारधारा के रूप में स्थापित कर दिया,जिसमे हिन्दुत्व का प्रभाव व्यापक हुआ।

धर्मनिरपेक्षता और हिन्दुत्व के बीच स्वाभाविक टकराव इस तथ्य से उत्पन्न होता है कि धर्मनिरपेक्षता सभी धर्मो के लिए समानता पर आधारित है, जबकि हिन्दूत्व हिन्दू सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों के प्रभुत्व में भारतीय राष्ट्र की पहचान देखता है। इस टकराव के कई सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक परिणाम हुए है, जैसे समान नागरिक संहिता, नागरिकता संशोधन कानून,धार्मिक स्वंतत्रता, अल्पसंख्यक अधिकार, शिक्षा नीति, और सार्वजनिक जीवन में हिन्दुत्व की भूमिका।

इस शोधपत्र में हिन्दुत्व की एतिहासिक उत्पति, वैचारिक और संस्थागत विकास, राजनीतिक उत्कर्ष, और धर्मनिरपेक्षता के साथ उसके संबंध को विवेचित किया जाएगा। यह अध्ययन न केवल हिन्दुत्व के समर्थकों और आलोचकों के दृष्टिकोणों को समझाने का प्रयास करेगा, बल्कि भारतीय समाज की बहुलता,लोकतंत्र और संविधान की स्थिरता के संदर्भ में इन विचारधराओं के समायोजन की संभावनाओं पर भी चर्चा करेगा।

1. हिन्दुत्व की उत्पतिः हिन्दुत्व विचारधारा आधुनिक भारत के राजनीतिक और सांस्कृतिक पुनर्गठन का परिणाम है। इसकी जड़े औपनिवेशक भारत की परिस्थितियों में हैं, जब हिन्दू समाज को अपने सांस्कृतिक धार्मिक और राजनीतिक अस्तित्व के लिए चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था। इस दौर में सावरकर ने 1922 में हिन्दुत्व हिन्दू कौन है? नामक पुस्तक के माध्यम से इस विचार को स्वरूप और परिभाषा दी। उन्होने हिन्दुत्वको केवल धार्मिक पहचान नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक, जातीय और अस्मिता का संवाहक बताया। उनके अनुसार, भारत की पितृभूमि और पुण्यभूमि दोनों वही व्यक्ति हैं जो हिन्दू माने जाएँगे। जैन, बौद्ध, सिख जैसे भारतीय धर्म शामिल किए गए मगर मुस्लिम व ईसाई समुदायों को विदेशी धर्म कहकर बाहर रखा गया। विनायक सावरकर ने हिन्दू समाज में बाहरी तत्वों के प्रभाव को राष्ट्रीय खतरा बताते हुए भारत की पहचान को हिन्दू सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर गढ़ने की कोशिश की। उनकी अवधारणा ने उप–महाद्वीप के धर्म–सामाजिक समीकरणों में एक स्थायी संघर्ष की नींव रखीः विशेषकर मुस्लिम और ईसाई समूहों को लेकर। सावरकर के विचार बहुत हद तक उस समय की राजनीकि हलचलों, जैसे खलीफत आंदोलन, और अंग्रेजी औपनिवेशक सत्ता के अंतर्गत मुस्लिम समुदाय की बढ़ती संगठित शक्ति के सन्दर्भ में विकसित हुए थे।

2. प्रमुख विचारक और संस्थागत विकासः सावरकर की हिन्दुत्व याख्या के तात्पर्य और उसके वैचारिक विस्तार को संस्था स्तर पर गति देने का काम किया केशव बलिराम हेडगेवार ने। उन्होने 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की स्थापना की। RSS न सिर्फ एक स्वयोवी सगंठन, बल्कि हिन्दू समाज को संगठित जागरूक और क्रियाशील करने का ऐतिहासिक मंच बना। इसका उद्देश्य समाज में अनुशसन, एकता, और संगठन की भावना का विकास करना था। संघ परिवार में RSS के अतिरिक्त विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल अखिल भारतीय विघार्थी परिषद (ABVP) भारतीय

किसान संघ, और अन्य संगठन भी शामिल है, जिन्होने हिन्दुत्व के विचारो को शिक्षा,युवा महिलाओं, मजदूरों और वकीलों तक फैलाया। आज RSS का नेटवर्क लाखों स्वयंसेवको के साथ 73,000 से अधिक शाखाओं में विस्तृत हैः इसके वैचारिक प्रशिक्षण और अनुशासित नेतृत्व ने हिन्दुत्व विचारधारा को समाज के हर वर्ग में स्थापित किया। गोलवलकर ने इसे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का रंग दिया और हिन्दू समाज को अखंड जागरूक शक्ति के रूप में देखा। संघ परिवार की सांगठनिक शक्ति ने लगातार नए क्षेत्रों–शिक्षा,श्रम,कृषक, महिला, पूर्व सैनिक,और कानून– में प्रवेश किया है जिससे हिन्दुत्व केवल धार्मिक या सांस्कृतिक विचार नही रहा, बल्कि एक संस्थागत राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया बन गई है।

3. स्वतत्रता–पूर्व और स्वतत्रता–उत्तर विकासः स्वतत्रता आंदोलन में गांधी और नेहरू ने धर्मनिरपेक्ष और सर्वधर्म समभाव का दृष्टिकोण रखा, जबकि हिन्दुत्व आंदोलन भारतीय पहचान के हिन्दू सांस्कृतिक स्वरूप पर जोर देता रहा। स्वतत्रता के बाद जब भारत का विभाजन धर्म–आधारित हुआ,तो हिन्दुत्ववादी विचारकों ने इसे अपनी ऐतिहासिक चेतना और अपने डर की पुष्टि के रूप मे देखा। 1947 के बाद RSS ने राजनीतिक गतिविधियों से दूरी बनाई, लेकिन समाज सुधार,राहतकार्य, और सांस्कृतिक एकता के क्षेत्र में अपना कार्य बढ़ाया। 1951 में भारतीय जनसंघ के गठन से हिन्दुत्व को औपचारिक राजनीतिक मंच मिला। जनसंघ प्रारम्भिक चुनावों बड़े पैमाने पर लोकप्रियता नहीं हासिल कर सका लेकिन 1977 में जनता पार्टी सरकार में साझीदारी के बाद इसकी भूमिका सशक्त हुई। इसी की परिणति थी।1980 में भारतीय जनता पार्टी (BJP) की स्थापना–जिसने हिन्दुत्व विचारधारा को राजनैतिक विमर्श का केन्द्र बना दिया।1980 के दशक में राम जन्मभूमि आंदोलन, अयोध्या विवाद, और बाबरी मस्जिद विध्वंस ने हिन्दूत्व को जनता और राजनीति दोनो में चर्चित बना दिया और सामाजिक ध्रुवीकरण को गति दी।

4. स्मकालीन राजनीतिक उत्कर्षः 2014 से देश की राजनीति में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी ने दो बार पूर्ण बहुमत प्राप्त किया और हिन्दुत्व विचारधारा को राष्ट्रीय राजनीति का मूल स्वरूप बना दिया। मोदी सरकार ने नागाकिता संशोधन अधिनियम (CAA) अनुच्छेद 370 का हटाना, गौरक्षा कानून, लव जिहाद पर चर्चा, अयोध्या में राम मंदिर निर्माण, और शिक्षा पाठ्यक्रम का बदलाव–ये सब हिन्दुत्व के एजेंडें को पुष्ट करने वाले निर्णय रहे। मीडिया और सोशल मीडिया ने इस विचारधारा को तीव्र गति दी। BJP ने एक भारत, श्रेष्ठ भारतः सबका साथ, सबका विकास,जैसे जनसंवाद देकर हिन्दू समाज को एकता के नए बोध से जोड़ा। विरोधी विचारों का दमन और सांस्कृतिक पुनरूत्थान की दिशा में उठाए गए कदमों ने भारत के बहुलवादी स्वरूप को चुनौती दीःवही कई लोग इसे देश की सांस्कृति और आत्मा की विजय बताते हैं। हिन्दुत्व के एजेंडें से भारतीय राजनीति में स्थिरता,सट्टा और अस्थिरता–तीनों की मिली–जुली प्रवृत्तियां दिखाती हैं।

5.हिन्दुत्व और धर्मनिरपेक्षता का टकरावः भारतीय संविधान के अनुसार "धर्मनिरपेक्षता" का उद्देश्य सभी धर्मो को समान दर्जा एंव अधिकार देना है, मगर हिन्दुत्व विचारधारा बहुलवाद को चुनौती देकर भारत को हिन्दू संस्कृति के प्रभुत्व वाले राष्ट्र के रूप में स्थापित करना चाहती है। यह टकराव

समान नागरिक संहिता अल्पसंख्यक अधिकारों,गौ सरक्षण,धर्म परिवर्तन कानून, और स्कूल पाठ्सक्रम जैसे विषयों में प्रकट होता रहा है। हिन्दुत्व समर्थकों का तर्क है कि धर्मनिरपेक्षता के नाम पर अल्पसंख्यक को विशेष अधिकार दिए गए है, जिससे बहुसंख्य समाज के हितों की अनदेखी होती है। इसके साथ, हिन्दुत्ववादी संगठनों ने धर्मनिरपेक्षता को पश्चिमी विचारधारा व भारतीय संस्कृति के लिए अभिशाप बताया। सांप्रदायिक हिंसा, सामाजिक ध्रुवीकरण, शिक्षा में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हिन्दुत्व का प्रभाव, और अल्पसंख्यक समुदायों के प्रति असहिष्णुता, इस टकराव के व्यावहारिक रूप है। मोदी सरकार के दौरान कई बार संविधान के सेक्युलर और सोशलिस्ट शब्द हटाने का प्रस्ताव आया जिससे बहस गहराई।

6. सामाजिक और सांस्कृतिक और मीडिया प्रभावः हिन्दुत्व के प्रभाव ने शिक्षा क्षेत्र, समाज,संस्कृति ,और मीडिया में गहराई से बदलाव किया है। स्कूल पाठ्यपुस्तकों में हिंदू गौरव, धार्मिक अस्मिता, और इतिहास को हिंदू दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जाता है। त्योहार और सांस्कृतिक आयोजनों का राजनीतिकरण हुआ–राम नवमी,हनुमान जंयती, शिवरात्री जैसे हिन्दू पर्व अब सामाजिक एकता या राजनीति के मंच बनते दिखते है। सोशल मीडिया ने इन मुद्दों को "लव जिहाद""गृह वापसी",धार्मिक पहचान,और गौरक्षा अभियान में बदल डाला है। विरोधी विचारों या असंतुष्ट लेखकों–प्रोफसरों का दमन, सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग,किताबों की वापसी और शिक्षा में हिन्दूत्व परिवार का दखल बढ़ा है। महिलाओं,युवाओं,और धार्मिक अल्पसंख्यकों लेकर हिन्दुत्व समर्थक संगठनों ने अपनी सोच को "राष्ट्रीय सुरक्षा"और संस्कृति संरक्षण के चश्मे से देखा हैःवही आलोचक इसे दमनकारी और असहिष्णुता का नाम देते हैं। हर क्षेत्र–साहित्य,कला, मीडिया–में हिन्दुत्व का असर देखा जा सकता है।

7. आलोचना और समर्थनः हिन्दुत्व की आलोचना करने वाले इसे भारतीय बहुलवादी समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा मानते है। उनके अनुसार यह विचारधारा असहिष्णुता,साम्प्रदायिकता, अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न,महिला अधिकारो और अभिव्यक्ति की स्वंतत्रता–इन सभी को कमजोर करती है। विश्विद्यालयों पत्रकारों और लेखकों को सैसंरशिप,धमकी और विरोध का सामना करना पड़ता है। शिक्षाविद् इसे लोकतांत्रिक मूल्यों–स्वतंत्रता, समानता, विविधता–के विरूद्ध मानते है। दूसरी ओर, हिन्दुत्व समर्थक इसे संस्कृति का अभिव्यक्ति, भारत की ऐक्य और सुरक्षा का वाहक, और सामाजिक बदलाव की आवश्यकता का प्रतीक बताते हैं। वे हिन्दुत्व को हिन्दू समाज की शक्ति और देश की एकता का मूल मानते हैं। सोशल मीडिया, जनजागरण,राष्ट्रीय और सांस्कृतिक अभियान, हिन्दुत्व के समर्थन में नए–नए तर्को और भावनाओं को स्थान देते हैं। हिन्दुत्व के उभार ने राजनीतिक संभावनाओं, सामाजिक समीकरणों और सांस्कृतिक स्वंय–चेतना में गहराई से परिवर्तन कर दिया है। समर्थक इसे नए भारत की पहचान मानते हैं,आलोचक इसे लोकतंत्र के लिए खतरा और बहुलतावाद को कमजोर करने वाला मानते हैं।

निष्कर्ष

हिन्दुत्व विचारधारा बीते एक शतक से अधिक समय में भारतीय राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विमर्श के केन्द्र में रही है। इसकी प्रांरभिक प्रेरणा उस ऐतिहासिक काल से जुड़ी है जब

औपनिवेशक भारत में सामाजिक –सांस्कृतिक एकता को अनेक बाहरी और आंतरिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था। ऐसे समय में हिन्दुत्व के उद्गमकर्ता विनायक दामोदर सावरकर ने इसे केवल एक धार्मिक विचार के रूप में नही बल्कि एक सांस्कृतिक–राष्ट्रीय परियोजना के रूप में प्रस्तुत किया, जिसका उद्देश्य था भारत की एक एकीकृत पहचान का निर्माण–ऐसी पहचान जो मूलतः हिन्दू सांस्कृतिक मूल्यों, परंपराओं और इतिहास पर आधारित हो।

समय के साथ इस विचारधारा ने कई चरणों में विकास कियाः– विनायक दामोदर सावरकर की परिभाष से लेकर केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की स्थापना और संगठनात्मक ढाँचे के निर्माण तक, तथा एम.एस. गोलवलकर के सांस्कृतिक राष्ट्रीवाद के सिद्धान्त तक। इस यात्रा ने यह स्पष्ट किया कि हिन्दूत्व अपने स्वरूप में बहुआयामी है–यह धार्मिक चेतना का समवाहक भी है,सांस्कृतिक गौरव का पुनरूत्थान भी, और राष्ट्र की अखंडता का एक विशेष दृष्टिकोण भी। पंरतु इसी के साथ यह एक ऐसी ढाँचागत विचारधारा भी बन गई, जिसके राजनीतिक और सामाजिक परिणाम व्यापक और कभी–कभी विवादस्पद भी है।

स्वंतत्रता पूर्व काल में हिन्दुत्व विचारधारा मुख्यतः– आत्मरक्षा,संगठन और अखण्ड भारत जैसी सांस्कृतिक कल्पना से प्ररित थी। लेकिन स्वंतत्रता के बाद, विशेषकर 1980 के दशक से, इसने अपने राजनीतिक आयाम को अधिक मुखर किया। राम जन्मभूमि आंदोलन इस प्रकिया का निर्णायक मोड़ था। जिसने हिन्दुत्व को देश की बहुसंख्यक हिन्दू आबादी के भावनात्मक और धार्मिक मानस से जोड़ा। वही 2014 और 2019 के आम चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की विजय ने इसे न केवल सत्ता के स्तरप र स्थापित किया, बल्कि नीति–निर्माण, शिक्षा, संस्कृति, मीडिया और वैश्विक मंचों पर भी प्रभावशाली बना दिया।

इन परिवर्तनों ने भारतीय धर्मनिापेक्षता के मॉडल के सामने नई चुनौतियाँ रखी। जंहा सविधान का आदर्श है कि राज्य सभी धर्मो के प्रति समान दृष्टिकोण रखे और किसी एक संस्कृति या धर्म को राष्ट्र की परिभाषा का आधार न बनाए, वहीं हिन्दुत्व इस पहचान को हिंदू संस्कृति के दृष्टिकोण से पुनपरिभाषित करना चाहता है। इस टकराव ने सार्वजनिक विमर्श में एक गहन बहस को जन्म दिया है–यह बहस केवल सत्ता के स्वरूप पर नहीं, बल्कि नागरिक अधिकारों, अल्पसंख्सक समुदायों की सुरक्षा, शिक्षा नीति, कानून–व्यवस्था, और यहां तक कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर भी केंद्रित है।

सकारात्मक दृष्टिकोण से देखा जाए तो हिन्दूत्व ने बहुसंख्यक हिंदू समुदाय में एकता,गौरव और सांस्कृतिक आत्मविश्वास को पुनर्स्थापित किया है। इसने भारत की प्राचीन पंरपराओं,गौरवशाली अतीत और सांस्कृतिक प्रतीकों को पुनः जीवित कर मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया है। यह विचारध ाारा अपने समर्थकों के बीच संस्कृति–सुरक्षा और राष्ट्र–निर्माण का पर्याय बन चुकी है। इसके नेटवर्क जैसे RSS और उससे जुड़े संगठन ग्रामीण क्षेत्रों,समवर्ती इलाकों और आपदा–ग्रस्त क्षेत्रों में सामाजिक सेवा कार्यो के माध्यम से अपने जनाधार को मजबूत करते है। हालाँकि आलोचनात्मक दृष्टिकोण से इसकी कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी है। इस विचारधारा के उभार ने सामाजिक ध्रुवीकरण और साम्प्रदायिक तनाव को बढ़ाया है। बहुलतावादी समाज में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक समूहो को बराबरी और

सुरक्षा की आवश्यकता होती है,परन्तु जब कोई विचारधारा एक विशेष सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्र की एकमात्र वैध पहचान के रूप में प्रस्तुत करती है तो अल्पसंख्यकों और भिन्न समुदायों में अनगाव की भावना पनप सकती है। इससे सामाजिक विश्वास और सांमजस्य पर प्रतिकूल असर पड़ता है।

एक महन्वपूर्ण बिंदू यह है कि हिन्दुत्व विचारधारा का राजनीतिकरण कई बार इसे सत्ता–साधन के रूप में सीमित कर देता है। इस स्थिति में इसके मूल सांस्कृतिक आदर्श और राष्ट्र–निमार्ण के लक्ष्य से समझौता हो सकता है। जब विचारधारा राजनीतिक लाभ के लिए प्रयुक्त होती है,तो उसका स्वरूप कट्र,आकामक और असहिष्णु भी हो सकता है–जो अंततः लोकतंत्र और सहअस्तिव की भावना को कमजोर करता है। भविष्य की दृष्टि से, हिन्दुत्व और धर्मनिपेक्षता का संबंध भारत के विकास पथ को निर्धारित करेगा। यदि वह संबंध संवाद, समझ और संवैधानिक मूल्यों के सम्मान पर आधारित होगा। हिन्दुत्व भारतीय राष्ट्रवाद का एक ऐसा रूप बन सकता है जो पंरपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करे। लेकिन यदि संबंध कटुता, बहिष्कार और असमानता पर आधारित होगा, तो इसका परिणाम सामाजिक विखंडन और राजनीतिक अस्थिरता के रूप में सामने आ सकता है।

इसलिए आवश्यक है कि–

1. संविधान के मूल्यों को संरक्षित रखते हुए सांस्कृतिक पुनरूत्थान के प्रयास किए जांए।
2. हिन्दुत्व की सांस्कृतिक विरासत को सकारात्मक ताकत के रूप में देखा जाए, न कि अन्य पहचानों के दमन के उपकरणों के रूप में।
3. शिक्षा, मीडिया और राजनीति में हिन्दुत्व का प्रयोग समावेशी दृष्टिकोण के तहत हो,जो विविधता को स्वीकार करें।
4. सामाजिक संवाद के माध्यम से बहुसंख्य समुदायों के बीच विश्वास और सम्मान के पुल बनाए जांए।

अततः हिन्दुत्व को केवल एक विचारधारा या राजनीतिक आन्दोलन के रूप में नही देखा जा सकता–यह भारतीय समाज की गहराई में मौजूद सांस्कृतिक स्मृति,ऐतिहासिक अनुभव और भावनाओं का संगम है। इसकी शक्ति और इसका खतरा,दोनो इसी बात पर निर्भर करते हैं कि इसे किस दृष्टि और किन लक्ष्यों के साथ आगे बढ़ाया जाता है। भारत की सबसे बड़ी चुनौती यही होगी की वह इस विचारधारा की उर्जा को राष्ट्र के निर्माण और एकता की दिशा में मोड़े बजाय इसके कि यह विभाजन और संघर्ष का कारण बने।

भविष्य के लिए सुझाव और नीति–निमार्ण संबंधी अनुशसाएँः

हिन्दुत्व विचारधारा ने भारतीय समाज और राजनीति को गहराई से प्रभावित किया है,और इसका प्रभाव भविष्य में भी जारी रहेगा। ऐसे में आवश्यक है कि इस प्रभाव को सकारात्मक दिशा में मोड़ने के लिए सुविचारित सुझाव और नीति–निमार्ण किए जांए,जो भारत की बहुलता,लोकतंत्र, और सामंजस्य को बनाए रखें। निम्नलिखित सुझाव और अनुशंसॉए इस संदर्भ में सहायक हो सकती हैः

1. सवैधानिक मूल्यों का संरक्षण और संवर्णन भारत की लोकतांत्रिक और बहुलवादी पहचान को मजबूत करने के लिए संविधान की मूल आदर्शो–धर्मनिपेक्षता,समानता और सामाजिक न्याय–को

सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। सरकार और समाज के सभी वर्गो को इन सिद्धांतो का सम्मान और पालन सुनिश्चित करना होगा,ताकि भारतीय सामाजिक ताने–बाने में धर्म या सांस्कृति के आधार पर कोई भेदभाव न हो।

2. समावेशी सांस्कृतिक नीति का विकास हिन्दुत्व की सांस्कृतिक विरासत को भारतीय संस्कृति के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में देखा जाए, लेकिन इस के साथ ही अन्य समुदायों की सांस्कृतिक पहचान और योगदान को भी समुचित स्थान दिया जाए। सांस्कृतिक कार्यक्रम, शिक्षा, तथा समुदायिक गतिविधियों में विभिन्न धर्मो और संस्कृतियों का सम्मान संभव बनाया जाना चाहिए ताकि सामाजिक समरसता बनी रहें।

3. शिक्षा प्रणाली में सुधार और समावेशन शिक्षा प्रणाली में ऐतिहासिक तथ्यों और सांस्कृतिक विविधताओं का समावेश हो,जो सभी समुदायों की दृष्टि और योगदान को उचित रूप से प्रदर्शित करे। पाठ्यक्रम को तटस्थ,तथ्यात्मक और समावेशी बनाया जाना चाहिए ताकि छात्र विभिन्न धर्मो और संस्कृतियों को समझ सकें और सहिष्णुता की भावना विकसित कर सकें।

4. सामाजिक संवाद और सह–अस्तित्व को प्रोत्साहन राज्य नागरिक समाज को चाहिए कि वे विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक समूहों के बीच नियमित संवाद को प्रोत्साहित करें। यह संवाद विश्वास निमार्ण, पूर्वाग्रहों का निराकरण,और सामाजिक एकता को मजबूत करने में मदद करेगा। ध्यान रहे कि राजनीति और सांस्कृतिक मतभेदों को सकारात्मक तौर पर सुलझाने के लिए मंच और अवसर प्रदान किए जाएं।

5. मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर जिम्मेदारी मीडिया ,खासतौर पर सोशल मीडिया पर व्यापत ध्रुवीकरण और कट्रता को कम करने के लिए नियामक निकायों को प्रभावी रूप से काम करना होगा। साथ ही,सामाजिक संवाद को बढ़ाने वाले,तथ्यात्मक और सहिष्णु कंटेंट का समर्थन किया जाना चाहिए। गलत सूचनाओं, नफरत फैलाने वाले संदेशो और सामाजिक द्वेष को रोकना जरूरी है।

6. अल्पसंख्यक अधिकारों की सुरक्षा अल्पसंख्यक समुदायों के अधिकारों की संवैधानिक सुरक्षा करने के लिए ठोस कदम उठाए जाए। अल्पसंख्यक को उनके धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक अधिकारों का संरक्षण मिलें,ताकि वे समाज के मुख्यधारा में सुरक्षित और समान भागीदार बन सके। इसके लिए न्यायिक और प्रशासनिक स्तर पर विशेष सतर्कता आवश्यक है।

7. नीतिगत पारदर्शिता और समावेशी प्रशासनिक दृष्टिकोण शासन और नीति–निर्माण में समावेशी पहल लागू की जानी चाहिए,जिससे सभी समुदायों की आवाज सुनी जा सके। इससे निर्णय प्रकिया में निश्पक्षता बढ़ेगी और विभिन्न वर्गो में विश्वास स्थापित होगा। साथ ही, सरकारी सोजनाओं और कार्यक्रमों में सांस्कृतिक विविधता का समावेश सुनिश्चत किया जाए।

8. सांप्रदायिक हिंसा और दहेज प्रथाओं के खिलाफ कठोर कदम सांप्रदायिक तनाव को कम करने के लिए कानूनों का सख्ती से पालन और सांप्रदायिक हिंसा के मामलों में त्वरित न्याय सुनिश्चित किया जाना चाहिए। सामाजिक स्तरप र असहिष्णुता और दहेज जैसी प्रथाओं के विरूद्ध जागरूकता अभियान चलाए जाएं।

9. राष्ट्रीय एकता के लिए समग्र दृष्टिकोण हिन्दुत्व और धर्मनिपेक्षता के बीच संवाद को केवल विरोध के स्थान पर एक समग्र राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया माना जाए। विविधता में एकता और सह–अस्तित्व को बल देते हुए ऐसी नीतियाँ बनानी होंगी, जो देश के सभी हिस्सों में न्याय, विकास और सांस्कृतिक सम्मान को सुनिश्ति करें।

ठन सुझावों को अमल में लाने के लिए सरकार,राजनीतिक दल, समाजसेवी संस्थांए,और पूरे समाज को सामूहिक प्रयास करना होगा। यदि संतुलन और सहिष्णुता कायम रहती है,तो हिन्दुत्व और धर्मनिपेक्षता दोनो की उपस्थिति भारत को मजबूत, समृद्ध और एकजुट राष्ट्र बनाने में सहायक होगी। इस प्रकार, हिन्दुत्व विचारधारा की ऊर्जा और प्रभाव को एक सकारात्मक और समावेशी दिशा में मोड़ने के लिए संवैधानिक सिद्धातों सामाजिक न्याय,सांस्कृतिक समृद्धि और, राजनीतिक संवाद के बीच संतुलन आवश्यक है, जो भारत के लोकतंत्र और बहुलता को सुरक्षित रखें।

सन्दर्भः

1. सावरकर विनायक दामोदर हिन्दुत्वः कौन है? प्रकाशकः वैणा प्रकाशन सन् 1923 प्रमुख उद्धरणः पृ० सं०–2–5,23–3 (हिन्दुत्व की परिभाषा एंव पितृभूमि/पुण्यभूमि का उल्लेख)
2. गोलवलकर.एम.एस. bunch of Thoughts प्रकाशक भारत प्रकाशन सन् 1966 प्रमुख पंक्तियाँः पृष्ठ 25–48 (सांस्कृतिक राष्ट्रवाद) पृ० सं०–135–145 (राष्ट्रनिमार्ण की अवधरणा)
3. आंध्र.के.एन Hindutva and Culture in India प्रकाशक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,1998. समीक्षाएँः अध्याय 2, पृ० सं०–41–60(हिन्दूत्व का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य)
4. भारतीय संविधान,सन् 1950–अनुच्छेद 25–28 सरकारी प्रकाशनः संविधान की मूल प्रति
   अनुच्छेद 25ः पृ० सं०–85–87
   अनुच्छेद 26ः पृ० सं०–87–88
   अनुच्छेद 27ः पृ० सं०–88–89
   अनुच्छेद 28ः पृ० सं०–89–90
5. राम जन्मभूमि आन्दोलन– The Ayodhya Reference लेखक शीला सेन सन् 1995 अध्याय 3ः पृ० सं०–78–102 (आन्दोलन का इतिहास और हिन्दुत्व पर प्रभाव)
6. भारतीय चुनाव आयोग–लोकसभा चुनाव परिणाम(2014,2019) लोकसभा चुनाव रिपोर्ट,सन् 2014 पृ० सं०–45–62 लोकसभा चुनाव रिपोर्ट,सन 2019 पृ० सं०–37–59
7. मीडिया और सोशल मीडिया संबंधी अध्ययन– media Hindutva and Punlic Opinion लेखकः पंकज मिश्रा, सन् 2017 अध्याय 4ः पृ० सं०–112–137 (हिन्दुत्व और जनता की सोच)